



**Original Article**

**‘कोसला का घोसला’ सिनेमा में चित्रित आर्थिक समस्याएँ**

श्रीमति राबन खुदाबक्ष मुल्ला<sup>1</sup>, प्रा. डॉ. मुख्त्यार शेख<sup>2</sup>

<sup>1</sup>हिंदी विभागाध्यक्षा, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, पुसेगांव

<sup>2</sup>हिंदी विभागाध्यक्ष, ए.शि.प्र.सं. संचलित कला महाविद्यालय, बिडकीन

Manuscript ID:

IJAAR-C130361

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 310 - 314

Submitted: 06 Feb. 2026

Revised: 14 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

श्रीमति राबन खुदाबक्ष मुल्ला

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786990

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786990>



Creative Commons



**सार:**

दिबाकर बॅनर्जी की निर्देशन में बनी हिंदी फिल्म ‘कोसला का घोसला’ सितंबर 2006 में प्रदर्शित हुई। इसके पटकथा लेखक जयदीप साहनी हैं। इसमें रणवीर शौरी, अनुपम खेर, बोमन ईरानी, किरण जुनेजा, विनय पाठक, तारा शर्मा, प्रवीण डबास, नवीन निश्चल आदि कलाकारों ने फिल्म को दिलचस्प बनाया है। सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी इसे प्राप्त हुआ है।

दिल्ली शहर में रहनेवाले कमल किशोर एक मध्यवर्गीय परिवार की व्यक्ति हैं। इनके परिवार में बड़ा बेटा शेयर बाजार में काम करता है और छोटा बेटा कम्प्यूटर में सॉफ्टवेयर इंजिनियर है। ‘कोसला का घोसला’ फिल्म का कथानक पारिवारिक तथा आर्थिक समस्या पर आधारित है। इसमें समाज में प्रोपर्टी स्कैम जैसे मुद्दों पर ध्यान देकर इसे पारिवारिक संघर्षों के साथ खूबसूरती से दिखाया है। यह फिल्म न केवल मनोरंजक कॉमेडी है, बल्कि हमारे समाज में व्याप्त कई समस्याओं को दर्शाती है। इनमें से प्रधान रूप से आर्थिक समस्या को अधिक प्रबलता से इसमें व्यंजित किया है। हमें विदित है कि एक मध्यवर्गीय परिवार के लिए उसकी आर्थिक स्थिति कितने मायने रखती है। इसका यदि आर्थिक बजट जब बिगड़ जाता है या उसे आर्थिक स्तर पर कोई धोखा देता है तब तो उसे कितने मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में पूरा परिवार मानसिक तनाव में आ जाता है और परिवार में निराशाजनक स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं। इस तरह आर्थिक समस्या पर आधारित इस फिल्म में मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाला किरदार कमल किशोर और उसके परिवार का है। लेखक ने इस फिल्म के जरिए तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा पारिवारिक तथा आर्थिक परिवेश को उजागर करते हुए यथार्थ समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया है। इसी प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए इस शोधपत्र को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। ‘कोसला का घोसला’ फिल्म में प्रापर्टी स्कैम और दो पीढ़ियों के बीच के अंतर को बहुत अच्छे तरीके से दिखाया है। इस फिल्म ने हिंदी सिनेमा में अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

**मुख्य शब्द:** समस्या, रुपये, मध्यवर्गीय, परिवार, स्थिति, फिल्म आदि।

**Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)**

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

**How to cite this article:**

श्रीमति राबन खुदाबक्ष मुल्ला, प्रा. डॉ. मुख्त्यार शेख. (2026). ‘कोसला का घोसला’ सिनेमा में चित्रित आर्थिक समस्याएँ. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 310 - 314. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786990>



**प्रस्तावना:**

**‘कोसला का घोसला’ का कथानक:**

नई दिल्ली में रहनेवाला कमल किशोर खोसला (अनुपम खेर) एक अर्धे उग्र का मध्यवर्गीय व्यक्ति है। उनके परिवार में उनकी दयालु और सहयोगी पत्नी सुधा (किरण जुनेजा) और बड़ा बीटा बलवंत (रणवीर शौरी), जिसे बनती के नाम से जाना जाता है, जो शेयर बाजार में काम करता है। साथ ही चिरौंजीलाल (परवीन डबास) एक महत्वाकांक्षी और आदर्श छोटा बेटा है, जो चिरौंजीलाल के नाम से जाना जाता है। इन्हें एक बेटी है निक्की (रूपम वाजवा) जो आत्मविश्वासी और बिंदास है। कमल एक साधारण व्यक्ति है। फिल्म के शुरुआत में ही वह उसकी मृत्यु का सपना देखता है, तो उसे एहसास होता है कि मरने पर भी उसके परिवारवाले उसकी कोई परवाह नहीं करते। कमल अपनी जीवनभर की मेहनत की कमाई गई भविष्य निधि की सारी बचत दक्षिण दिल्ली में एक जमीन का टुकड़ा खरीदने में खर्च कर देता है। जमीन की कुल किंमत 30 लाख रुपये थी और जमीन खरीदकर देनेवाले दलाल विजेंद्र (राजेंद्र सेठी) को कमीशन के तौर पर 5 लाख रुपये अतिरिक्त दिए गए थे। कमल इस जमीन पर अपने परिवार के लिए दो मंजिला मकान बनाना चाहता है तथा उसे उम्मीद है कि चेरी के कार्यस्थल के लिए भी यह घर उचित है। जबकि सॉफ्टवेयर इंजीनियर चेरी पिता की योजनाओं से खुश नहीं है। वह अमेरिका के न्यूयार्क में नौकरी करने के लिए जाना चाहता है। आसिफ इक़बाल (विनय पाठक) पासपोर्ट और विजासंबंधी कागजी कारवाई में उसकी मदद करता है। चेरी इस बारे में सिर्फ अपनी प्रेमिका मेघना चोपड़ा (तारा शर्मा) को बताता है। मेघना, चेरी के इस फैसले से नाराज है। वह चेरी को समझाती है कि कुछ समय के लिए यही रहकर वह पिता का सहारा बने। आसिफ के मजाक उड़ने पर चेरी को अपने नाम के लिए

शर्मिंदगी महसूस होती है। अपने परिवार को वह अपना नाम बदलने की इच्छा व्यक्त करता है। कमल का पड़ोसी दोस्त अमर सिंह साहनी (विनोद नागपाल) उसे समझाते हैं कि चेरी को समझना चाहिए, उससे मित्रता करनी चाहिए। इसलिए कमल और बंटी ड्रिक्स का आयोजन कर एक छोटीसी पार्टी रखते हैं, तब चेरी शराब पीने से मना करता है। इस समय बाप-बेटे में पारिवारिक मामलों और जिम्मेदारियों को लेकर कुछ विवाद होता है, तब चेरी न्यूयार्क जाने की बात कह देता है। यह सुनकर परिवारवाले नाराज हो जाते हैं।

एक दिन खोसला परिवार भूमिपूजन के लिए अपनी जमीन पर जाते हैं, तब उन्हें इस बात की हैरानी होती है कि किसी ने उनकी जमीन पर कब्जा कर लिया है। विजेंद्र से पूछताछ करने पर उन्हें पता चलता है कि वे सभी लोग संपत्ति हड़पनेवाले एक गिरोह का हिस्सा हैं, जिसका संबंध एक बेईमान और ताकतवर बिल्डर किशन खुराना (बोमन ईरानी) से है। तब वे विजेंद्र की सलाह देने पर खुराना के फॉर्म हाउस आते हैं; लेकिन खुराना उन्हें वापस विजेंद्र के पास भेज देता है। अंत में उन्हें पता चलता है कि पहले विजेंद्र इस योजना में खुराना के साथी थे और वे कमल और बंटी को जमीन वापस लेने के लिए बोली लगाने की सलाह देते हैं। इसके अनुसार जमीन की शुरू की 50% किंमत 15 लाख रुपये हैं, जो कमल के पास नहीं है और न ही वह देने के लिए तैयार हैं। कमल, बंटी, चेरी और साहनी इस मामले में स्थानीय सरकारी अधिकारियों और राजनीतिक एजेंसियों से सहायता की मांग करते हैं। पर कोई भी संस्था खुराना का सामना करने के लिए तैयार नहीं होती है। इसके बजाय मध्यस्थता के लिए 2 लाख रुपये का कमिशन देने के बदले खुराना द्वारा मांगी गई राशि को लगभग 10 लाख रुपये कम करवाने का प्रस्ताव देती है; जिससे कमल स्तब्ध रह जाता है। अपने पिता की बेबसी से द्रवित होकर बंटी स्थानीय



पहलवानों के एक गिरोह से मदद लेता है और खुराना के गुंडों द्वारा बनाई गई चारदीवारों को तोड़कर बलपूर्वक अपनी जमीन पर कब्जा कर लेते हैं। जबकि यह जीत क्षणिक होती है, क्योंकि पुलिस आती है और कमल को जमीन पर अतिक्रमण के झूठे आरोपों में गिरफ्तार कर लेती है। खुराना के छलपूर्ण इशारे पर उन्हें दूसरे दिन जेल से छोड़ दिया जाता है। और उसे 12 लाख रुपये का संशोधित प्रस्ताव दिया जाता है। परिणामस्वरूप कमल अपना हौसला और स्वाभिमान खो देता है। वह अपनी नियति को स्वीकार कर लेता है और खुराना का सामना करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है। वह अपने परिवार को आगे कोई कदम न उठाने की बिनती करते हैं और चेरी को न्यूयार्क जाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आखिर में चेरी को अपने पिता की अहमियत समझती है और वह वह उनकी मदद करने का इरादा करता है। चेरी और मेघना इस गंभीर स्थिति से बाहर निकलने के लिए आसिफ की मदद लेते हैं। तब आसिफ बताता है कि खुराना ने उसकी पुश्तैनी जमीन हड़प लेकर उसे कैसे धोखा दिया था। आसिफ खोसला परिवार को खुराना को धोखा देकर उससे पैसे देकर अपनी जमीन हासिल करने की चतुर योजना बताता है। चेरी, बंटी, मेघना और आसिफ मिलकर खुराना के विरोध में एक नाटक रचते हैं, जिसमें मत्स्य विभाग के स्वामित्ववाली नौ एकड़ जमीन का एक टुकड़ा शामिल होता है, जो राजमार्ग के पास है। साथ ही मेघना के गुरु और एक थिएटर समूह के प्रबंधक बापू (नवीन निश्चल) से मदद मांगते हैं और उन्हें दुबई, यूएई के एक उद्योगपति और जमीन के मालिक 'एमएलसेठी' की भूमिका निभाने के लिए कहा जाता है। और यह भ्रम पैदा किया जाता है कि उनके पास बेचने के लिए एक किंमती जमीन है। तब खुराना यह जमीन देखने आता है तब एक विश्वसनीय परिदृश्य तैयार किया जाता है और खुराना बापू से 1.4 करोड़ रुपये में

जमीन खरदीने के लिए राजी हो जाता है। साथ ही 35 लाख अग्रिम भुगतान भी देता है। यह पैसे पाकर खोसला परिवार बहुत खुश होता है और चिंतित भी होता है कि कहीं खुराना बापू को शराब पिलाकर सच न उगलाए। पर अंत में कमल को अपनी जमीन वापस मिल जाती है और खुराना को अपनी जमीन खाली करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। चेरी अपना नाम बदल कर चिराग रख लेता है और न्यूयार्क जाने की अपनी योजना छोड़ देता है और बंटी अपना रियल एस्टेट व्यवसाय शुरू करता है। चेरी और मेघना की शादी हो जाती है। और पूरा खोसला परिवार उसी जमीन पर बने, नए घर 'न्यू खोसला कुंज' में बस जाते हैं। अंत में खुराना को पता चलता है कि उसे धोखा दिया गया है। अपने ही किये का फल चखने के बाद वह अपनी प्रतिष्ठा बचाने की कोशिश करता है। इस तरह इस फिल्म का कथानक समाप्त हो जाता है।

इस प्रकार इस फिल्म का कथानक एक मध्यवर्गीय परिवार की झलक प्रस्तुत करता है। इसमें दिखाए गए किरदार हमें रोजमर्रा की जिंदगी में नजर आते हैं। यह फिल्म इस परिवार की मेहनत, ईमानदारी और उनके सपनों पर आधारित है। अपनी जमीन वापस पाने के लिए खोसला परिवार को काफी संघर्ष करना पड़ता है। भ्रष्ट और लालची खुराना उन्हें धोखा देकर उनकी जमीन हड़प लेता है तब इस परिवार की आर्थिक अवस्था बहुत ही दयनीय बन जाती है। इस मुखिया के दो बेटे पढ़े-लिखे होने पर भी उन्हें रोजगार की तलाश में भटकना पड़ता है। परिवार का मुखिया अपनी जीवनभर की पूँजी से कोठी बनाने का सपना देखता है, तो चालाक प्रापर्टी डीलर उस जमीन पर अवैध कब्जा कर लेता है और बिना अपराध के खुराना के बदले कमल किशोर को जेल जाना पड़ता है। इस हालात में वे असहाय बन रोने लगते हैं। यह फिल्म धोखाधड़ी और आर्थिक भ्रष्टाचार को उजागर करती



है कि कैसे रसूखदार लोग कानून की कमियों का फायदा उठाकर आम आदमी को प्रापर्टी के मामलों में धोखा देते हैं इस स्थिति में न पुलिस इनकी मदद करती है न ही कोई सामाजिक संस्था। आज “पुलिस कर्मी अपनी शक्ति का प्रयोग मनमाने ढंग से करती है। पुलिस द्वारा किये अत्याचार से साधारण जनता परेशान है। झूठ को सच व दोषी को निर्दोष बताने में इन्हें देर नहीं लगती। हर पुलिस स्टेशन पर रिश्तखोरी एवं घूसखोरी होती है।”<sup>2</sup> जैसे कमल किशोर को पुलिस बिना समझे जेल में डाल देती है। कमल किशोर और उसके परिवार की पीड़ा यह एक मध्यवर्गीय परिवार की वेदना तथा विवशता को मुखर करती है। समाज में ऐसे कितने परिवार हैं, जो मूक रहकर इस तरह के अन्याय को बर्दाश्त करते रहते हैं। कमल किशोर जैसा आम आदमी अपने घर में सूख से रहना चाहता है; पर खुराना जैसे लोग उसका शोषण करते हैं, तब वह पूरी तरह टूट जाता है और विवश होकर, अपनी सोच नकारात्मक कर लेता है। अंत में अपनी मेहनत की कमाई खोने के बाद मजबूरन उन्हें अपनी नैतिकता से समझौता करना पड़ता है। खोसला परिवार अपनी खोयी हुई आर्थिक पूंजी वापस पाने के लिए भू-माफिया को उसीके खेल में हराकर अपनी जमीन वापस लेता है; जो एक भावात्मक और नैतिक जीत है।

### निष्कर्ष :

इस तरह ‘कोसला का घोसला’ फिल्म में कमल किशोर जैसे आम आदमी का जीवन दृष्टिगोचर होता है। उसके जीवन में कई मुसीबतें आती हैं। “रोटी, कपड़ा, और मकान की समस्याओं से वह परेशान है। जीवनावश्यक बातों के लिए वह तरसता रहता है। दुःख, अभाव, गरीबी, शोषण से उसका जीवन बद से बदतर होता जा रहा है। उसे अपना जीवन नारकीय लगता है जीवन की परेशानियों से वह त्रस्त हो चुका

है।”<sup>3</sup> आर्थिक अभाव के कारण बंटी वाम मार्ग की ओर बढ़ता है। कुछ पैसे देकर पहलवानों की मदद से दीवारें गिरा देता है। ऐसी अवस्था में वह नैतिकता को भूल जाता है। फिर अच्छे-बुरे का विचार या ईमान की चिंता कोई नहीं करता है। इस परिवार की सहने की सीमा खत्म हो जाती है तब वह खुराना जैसा ही बर्ताव और व्यवहार करता है और अपने पैसे तथा जमीन वापस पा लेता है। इस तरह समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की ओर लेखक हमें लक्षित करता है। आम आदमी दिनभर जी-तोड़ मेहनत करने के बाद भी आराम से रह नहीं सकता। उसके जीवन में दुःख-दर्द, उदासी, निराशा तथा आंसू के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता। यह फिल्म कमल किशोर जैसे मध्यवर्गीय व्यक्ति तथा परिवार पर होनेवाले अत्याचारों की कहानी बयां करती है। शोषक वर्ग उनका शोषण करता रहता है और हालात के कारण वे बेबस, लाचार बनने पर मजबूर हो जाते हैं। खुराना जैसा एक वर्ग जिसे बिना मेहनत के आलिशान मकान, सुख-ऐश्वर्य के सब साधन उपलब्ध हैं। और कमल किशोर जैसा दूसरा वर्ग है जो श्रमिक है, आर्थिक अभाव में जिंदगी जीने के लिए विवश है। खुराना जैसे गुंडों के कारण खोसला परिवार के लोगों में दहशत और खौफ घर कर जाता है। एक अनजान भय के कारण यह परिवार मानसिक रूप से तनाव की स्थिति में आ जाता है कमल किशोर का बेटा चंदी पैसों के आकर्षण के कारण विदेश जाना चाहता है। इस तरह महत्वाकांक्षी युवा पद, पैसा पाने की होड़ में अपने घर-परिवार से दूर हो जाते हैं यह सच है कि महानगरीय जीवन में पैसों की अंधी दौड़ मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है। इस तरह अपने देश की आर्थिक विषमता को एक ज्वलंत समस्या के रूप में उभारा है। अतः प्रस्तुत फिल्म में लेखक ने अर्थ को केंद्र में रखकर आर्थिक तथा सामाजिक विषमता, श्रम का शोषण और



बेरोजगारी की समस्या को प्रधान रूप से चित्रित किया है। इस दृष्टि से यह एक सफल फिल्म रही है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची:**

1. [www.google.com](http://www.google.com)
2. समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक चेतना – डॉ. करसन रावत
3. हिंदी के नवरत्न – मधु खराटे, पृ.102